7 समाज और महिलाओं की भूमिका

लड़का या लड़की होना किसी की भी एक महत्वपूर्ण पहचान और उनकी अस्मिता होती है। जिस समय में हम बड़े हो रहे होते हैं, हमें सिखाया जाता है कि लड़के तथा लड़कियों का कैसा व्यवहार स्वीकार करने योग्य है? उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं? हम प्रायः यही सोचते हुए बड़े होते हैं कि ये बातें सब जगह बिल्कुल एक –सी है। लेकिन क्या सभी समाजों में लड़के और लड़कियों के प्रति एक जैसा ही नजरिया है? इस अध्याय में हम इसी प्रश्न का उत्तर जानने की कोशिश करेंगे। हम यह भी देखेंगे कि लड़के एवं लड़कियों को दी जाने वाली अलग – अलग भूमिका उन्हें भविष्य में स्त्री तथा पुरूष की भूमिका के लिए कैसे तैयार करती है।

हम यह अहसास करते हैं कि समाज,लड़के एवं लड़कियों में स्पष्ट अंतर करता है। यह बहुत कम आयु से ही शुरू हो जाता है। उदाहरण के लिए –उन्हें खेलने के लिए भिन्न खिलौने दिए जाते हैं। प्रायः लड़कों को खेलने के लिए कारें तथा लड़कियों को गुड़िया दी जाती है। दोनों ही खिलौने,खेलने में बड़े आनंददायक हो सकते हैं, फिर लड़कियों को गुड़िया तथा लड़कों को कार ही क्यों दी जाती है ? खिलौने बच्चों को यह बताने का माध्यम बन जाते हैं कि जब वे बड़े होकर स्त्री एवं पुरूष बनेंगे, तो उनका भविष्य अलग–अलग होगा। अगर हम विचार करें तो यह अंतर प्रायः नित्य की छोटी–छोटी बातों में मानकर रखा जाता है।लड़कियों को धीमी आवाज में बात करनी चाहिए एवं लड़कों को रौब से–ये सब बच्चों को यह बताने के तरीके हैं कि जब वे बड़े होंगे तो उनकी विशिष्ट भूमिकाएँ होंगी। बाद के जीवन में इसका प्रभाव हमारे अध्ययन के विषयों या व्यवसाय के चुनाव पर भी पड़ता है।

हमारे समाज में पुरूषों एवं महिलाओं की भूमिकाओं तथा उनके काम के महत्व को समान नहीं समझा जाता है। पुरूषों और महिलाओं की हैसियत एक जैसी नहीं होती है। आओ देखें कि पुरूषों एवं स्त्रियों के द्वारा किए जाने वाले कामों में यह असमानता कैसे है ?

इन्हें करके देखें –

• आप अपने पड़ोस की किसी गली या पार्क का चित्र बनाइए। उसमें छोटे बच्चों द्वारा की जा सकने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को दिखाइए। यह कार्य आप अकेले या समूह में भी कर सकते हैं।

• अब आपके द्वारा बनाए गए चित्र में लड़के और लड़कियों की संख्या की गणना कर यह बताइए कि आपने किस कारण इस प्रकार की संख्या रखा।

• आपके पड़ोस में,सड़क पर,पार्कों तथा बाजारों में देर शाम या रात के समय क्यों स्त्रियाँ एवं लड़कियाँ कम दिखाई देती हैं ?

• क्या लड़के एवं लड़कियाँ अलग– अलग कामों में लगे हैं ? विचार करके इसका कारण बताइए ? यदि आप लड़के एवं लड़कियों के स्थान परस्पर बदल देंगे,अर्थात् लड़कियों के स्थान पर लड़कों तथा लड़कों के स्थान पर लड़कियों को रखेंगे तो क्या होगा ?

घरेलू काम का मूल्य

सारी दुनिया में घर के काम की मुख्य जिम्मेदारी महिलाओं की ही होती है जैसे – बच्चों,बुजुर्गो एवं बीमारों की देखभाल करना, परिवार का ध्यान रखना । फिर भी, जैसा हमने देखा, घर के अंदर किए जाने वाले कार्यों को महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता है। ऐसा मान लिया जाता है कि वे तो महिलाओं के स्वाभाविक कार्य हैं, इसीलिए इन कार्यों के लिए उन्हें पैसा देने की कोई आवश्यकता नहीं है। समाज इन कार्यों को अधिक महत्व नहीं देता ।

घर में कार्य करने वालों का जीवन

बहुत –से घरों में विशेषकर शहरों एवं नगरों में लोगों को घरेलू काम के लिए रख लिया जाता है । वे बहुत काम करते हैं –झाड़ू लगाना, सफाई करना, कपड़े तथा बर्तन धोना, खाना पकाना, छोटे बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करना आदि। घर का काम करने वाली अधिकाशतः स्त्रियाँ होती हैं। कभी – कभी इन कार्यों को करने के लिए छोटे लड़के अथवा लड़कियों को काम पर रख लिया जाता है। घरेलू काम का अधिक महत्व नहीं है इसलिए इन्हें मजदूरी भी कम दी जाती है। घरेलू काम करने वालों का दिन सुबह पाँच बजे से प्रारम्भ होकर देर रात बारह बजे तक भी चलता है। जी–तोड़ मेहनत करने के बावजूद प्रायः उन्हें नौकरी पर रखने वाले उनसे सम्मानजनक व्यवहार नहीं करते हैं। दिल्ली में घरेलू काम करने वाली एक स्त्री ने अपने अनुभव के बारे में इस तरह बताया–

"मेरी पहली नौकरी एक अमीर परिवार में लगी थी जो तीन –मंजिल वाले भवन में रहता था। मेमसाहब में काम करने वालों के प्रति संवेदना नहीं थी। वह हर काम करवाने के लिए चिल्लाती रहती थी। मेरा काम रसोई का था। दूसरी दो लड़कियाँ सफाई का काम करती थीं।हमारा दिन सुबह पाँच बजे शुरू होता था। नाश्ते में हमें एक प्याला चाय तथा दो रूखी रोटियाँ मिलती थी। हमें तीसरी रोटी कभी नहीं मिली शाम के वक्त जब मैं खाना पकाती थी तो दोनों लड़कियाँ मुझसे एक और रोटी की मांग करती थीं।मैं चुपके से उन्हें एक–एक रोटी दे देती थी और स्वयं भी रोटी ले लेती थी। हमें दिनभर काम करने के बाद बड़ी भूख लगती थी। हमें घर में चप्पल पहनने पर पाबंदी थी, मुझे गुस्सा भी आता था और अपमानित भी महसूस होता था। क्या हम दिनभर काम नहीं करते थे ? क्या हम कुछ सम्मानजनक व्यवहार के हकदार नहीं थे ? "

वास्तव में जिसे हम घरेलू काम कहते हैं, उसमें अनेक कार्य शामिल रहते हैं। इनमें से कुछ कामों में अधिक शारीरिक श्रम लगता है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में महिलाओं एवं लड़कियों को दूर –दू से पानी लाना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों और लड़कियों को जलाऊ लकड़ी के भारी गट्ठर सिर पर ढोने पड़ते हैं। कपड़े धोने ,सफाई करने ,झाड़ू लगाने तथा वजन उठाने के कामों में झुकने,उठाने और सामान लेकर चलने की जरूरत होती है। बहुत – से काम जैसे खाना बनाने आदि में लंबे समय तक गर्म चूल्हे के सामने खड़ा रहना पड़ता है। महिलाएँ जो काम करती हैं,वह शारीरिक, भारी एवं थकाने वाला काम होता है– जबकि हम आमतौर पर सोचते हैं कि पुरूष ही ऐसा काम कर सकते हैं।

1 जरा सोचिए ,अगर आपकी माँ अथवा वे लोग जो घर के काम में लगे हैं,एक दिन के लिए हड़ताल पर चले जाएँ,तो क्या होगा ?

2 लोग ऐसा क्यों सोचते हैं कि आमतौर पर पुरूष या लड़के घर का काम नहीं करते ? आपके विचार में क्या उन्हें घर का काम करना चाहिए ?हाँ तो क्यों और नही तो क्यों नहीं अपना तर्क दीजिए।

हम एक और उदाहरण लक्ष्मी का पढ़ते हैं जो माता– पिता के सहयोग से अपने अस्तित्व को सिद्ध करती है। आमतौर पर रेल का इंजन आदमी चलाते हैं। पर झारखंड के एक गरीब आदिवासी परिवार की 27 वर्षीय महिला जिसका नाम लक्ष्मी लकरा है ने इस धारा का रूख बदल दिया है। उत्तरी रेलवे की वह पहली महिला इंजन चालक बन गई है।

लक्ष्मी के माता – पिता पढ़े –लिखे नहीं हैं पर उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए बहुत संघर्ष किया । लक्ष्मी की शिक्षा एक सरकारी स्कूल में हुई । स्कूल में पढ़ने के साथ– साथ लक्ष्मी घर के कामों तथा अन्य जिम्मेदारियों में माता–पिता का हाथ बटाती थी। उसने मन लगाकर और मेहनत से पढ़ाई की तथा स्कूल की पढ़ाई पूरी करके इलैक्ट्रॉनिक्स में डिप्लोमा अर्जित किया । फिर वह रेलवे बोर्ड की परीक्षा दी और पहली ही कोशिश में उत्तीर्ण हो गई।

लक्ष्मी कहती है "मुझे चुनौतियों से खेलना बहुत पसंद है और जैसे ही कोई यह कहता है कि अमुक काम लड़कियों के लिए नहीं है,मैं उसे करके रहती हूँ।" लक्ष्मी के जीवन में ऐसा करने के अनेक अवसर आए। एक अवसर तब आया जब वह इलैक्ट्रॉनिक्स में डिप्लोमा करना चाहती थी, फिर उसने पॉलीटेक्नीक कॉलेज में मोटर साइकिल चलाई और तब उसने तय किया कि वह इंजन ड्राइवर बनेगी। इसी प्रकार हमारे छत्तीसगढ़ की महिलाएँ भी विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही हैं जैसे –

मनीषा ठाकुर सहायक पुलिस महानिरीक्षक, बस्तर में महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा के लिए काम कर रही है। यंग सांइटिंस्ट अवार्ड द्वारा सम्मानित पूजा अग्निहोत्री,(प्राध्यापक) इंजीनियरिंग कॉलेज –डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन (DRDO) वर्तमान में साइंस के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। लीना यदु, रायपुर की पहली महिला रेसलर एवं कोच।

इन्होंने इन्टरनेशनल टीम का प्रतिनिधित्व किया है। इन्हें छत्तीसगढ़ की पहली दंगल गर्ल कहा जाता है। हिना यास्मीन खान, जिला अभियोजन अधिकारी, पति की नक्सली हमले में शहीद होने के बाद विभिन्न समस्याओं का सामना करते हुए अपने पद के साथ बखूबी न्याय कर रही है। मोना सेन, छत्तीसगढ़ फिल्म अभिनेत्री, मिनी माता सम्मान से सम्मानित, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की ब्रांड एम्बेस्डर रही। वह अनाथ बच्चों को गोद लेकर उनका जीवन संवार रही है। तीजन बाई पंडवानी गायिका, बी.एस.पी (भिलाई इस्पात कारखाना) से सेवा निवृत (मुक्त) होने के बाद बच्चों को पंडवानी गायिकी की कला सिखा रही है और इस दौड़ में देश– विदेश में जाकर अपने देश का नाम रोशन किया है।

चित्र–7.1 तीजन बाई (पंडवानी गायिका)

महिलाओं का काम और समानता

जैसा कि हमने अध्ययन किया, महिलाओं के घरेलू एवं देखभाल के कामों को कम महत्व देना एक व्यक्ति या परिवार का मामला नहीं है। यह महिलाओं एवं पुरूषों के बीच असमानता की एक बड़ी सामाजिक व्यवस्था का ही भाग है। इसलिए इसके समाधान हेतु जो कार्य किए जाते हैं वे केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक स्तर पर नहीं, वरन् शासकीय स्तर पर भी होने चाहिए । हम जानते हैं कि समानता हमारे संविधान का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। संविधान स्पष्ट कहता है कि स्त्री या पुरूष होने के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। परंतु वास्तविकता में लिंगभेद किया जाता है। सरकार इसके कारणों को समझने के लिए तथा इस स्थिति का सकारात्मक निदान ढूंढ़ने के लिए वचनबद्ध है। उदाहरण के लिए,सरकार को यह मालूम है कि बच्चों की देखभाल तथा घर के काम का बोझ महिलाओं पर पड़ता है। स्वाभाविक रूप से इसका असर लड़कियों के स्कूल जाने पर भी पड़ता है। इससे ही यह तय होता है कि क्या महिलाएँ घर के बाहर काम कर सकेंगी और यदि करेंगी तो किस प्रकार का काम या कार्यक्षेत्र चुनेंगी। पूरे देश के कई गाँवों में शासन ने आँगनबाड़ियाँ तथा बालवाड़ियाँ खोली हैं।

चित्र–7.2

यह पोस्टर (चित्र–7.2) बंगाल की महिलाओं के समूह ने बनाया है। इसे आधार बनाकर आप कोई एक अच्छा–सा नारा तैयार कीजिए।

परिवर्तन के लिए सीखना

स्कूल जाना आपके जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है । जैसे –जैसे स्कूलों में प्रत्येक वर्ष अधिकाधिक संख्या में बच्चे प्रवेश ले रहे हैं, हम सोचने लगे हैं कि सभी बच्चों के लिए स्कूल जाना एक साधारण बात है । आज हमारे लिए यह कल्पना करना भी मुश्किल है कि कुछ बच्चों के लिए स्कूल जाना और पढ़ना पहुँच के बाहर की बात या अनुचित बात भी मानी जा सकती है,परंतु अतीत में लिखना तथा पढ़ना कुछ लोग ही जानते थे। अधिकांश बच्चे वही काम सीखते थे जो उनके परिवार में होता था या उनके बुजुर्ग करते थे। लड़कियों की स्थिति तो और भी खराब थी।उन समाजों में जहाँ लड़कों को पढ़ना –लिखना सिखाया जाता था, लड़कियों को एक अक्षर तक सीखने की अनुमति नहीं थी। यहाँ तक कि उन परिवारों में भी जहाँ कुम्हारी ,बुनकरी (वस्त्र बुनना) तथा हस्तकला सिखाई जाती थी,यह धारणा थी कि लड़कियों और औरतों का काम केवल सहायता करने तक ही सीमित है। उदाहरण के लिए – कुम्हार के व्यवसाय में महिलाएँ मिट्टी एकत्र करती थीं। तथा बर्तन बनाने के लिए उसे तैयार करती थीं। चूँकि वे चाक नहीं चलाती थीं, इसलिए उन्हें कुम्हार नहीं माना जाता था। समाज के बहुत विरोध के बावजूद लड़कियों की शिक्षा के लिए बहुत सी महिलाओं तथा पुरूषों ने लड़कियों के लिए स्कूल खोलने का प्रयत्न किया । महिलाओं ने पढ़ना लिखना सीखने के लिए संघर्ष किया ।

महिला आंदोलन

वर्तमान में महिलाओं एवं लड़कियों को पढ़ने तथा स्कूल जाने का अधिकार है। अन्य क्षेत्र भी हैं जैसे कानून में सुधार, हिंसा और स्वास्थ्य जहाँ लड़कियों एवं महिलाओं की स्थिति बेहतर हुई है। ये परिवर्तन अपने–आप नहीं आए हैं। औरतों ने व्यक्तिगत स्तर पर और आपस में मिलकर इन परिवर्तनों के लिए संघर्ष किए हैं। इन संघर्षों को महिला आंदोलन कहा जाता है। देश के विभिन्न भागों से कई महिलाएँ तथा कई महिला संगठन इस आंदोलन के हिस्से हैं। कई पुरूष भी महिला आंदोलन का समर्थन करते हैं। इस आंदोलन में जुटे लोगों की मेहनत, निष्ठा तथा उनकी विशेषताएँ इसे एक बहुत ही जीवंत आंदोलन बनाती हैं। इसमें चेतना जागृत करने, भेदभावों का मुकाबला करने तथा न्याय हासिल करने

चित्र–7.3 महिलाओं का काम और समानता

के लिए भिन्न –भिन्न रणनीतियों का उपयोग किया गया है। इनकी कुछ झलकियाँ आप यहाँ भी देख सकते हैं।

अभियान

भेदभाव तथा हिंसा के विरोध में अभियान चलाना महिला आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अभियानों के फलस्वरूप नए कानून भी बने हैं।सन् 2006 में एक कानून बनाया गया है जिससे घर के अंदर शारीरिक तथा मानसिक हिंसा से पीड़ित महिलाओं को कानूनी सुरक्षा दी जा सके।

इसी प्रकार महिला आंदोलन के अभियानों के कारण 1997 में सर्वोच्च न्यायालय ने कार्य के स्थान पर और शैक्षणिक संस्थानों में महिलाओं के साथ होने वाली यौन प्रताड़ना से उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के लिए विशाखा कमेटी गठित किए जाने के दिशा निर्देश जारी किए हैं। दहेज से संबंधित कानून, बालिकाओं के लिए 1098 टोल फ्री नंबर दिया है जिससे उन्हें कभी भी सुरक्षा उपलब्ध कराई जा सके।

जागरूकता बढ़ाना

महिला आंदोलन का एक प्रमुख कार्य महिलाओं के अधिकारों के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाना भी है। गीतों,नुक्कड़– नाटकों एवं जनसभाओं के माध्यम से वे अपने संदेश लोगों के बीच पहुँचाते हैं।

विरोध करना

जब कभी भी महिलाओं के हितों का उल्लंघन होता है जैसे किसी कानून अथवा नीति द्वारा तो महिला आंदोलन ऐसे उल्लंघनों के खिलाफ आवाज उठाते हैं। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए रैलियाँ,प्रदर्शन आदि बहुत असरकारक तरीके अपनाते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. नीचे दिए गए कुछ कथनों पर विचार कीजिए और बताइए कि ये सत्य है या असत्य? अपने उत्तर के समर्थन में एक उदाहरण दीजिए।

(क) सभी समुदाय या समाजों में लड़कों तथा लड़कियों की भूमिकाओं के बारे में एक जैसे विचार नहीं पाए जाते।

(ख) हमारा समाज बढ़ते हुए लड़के तथा लड़कियों में कोई भेद नहीं करता।

(ग) वे महिलाएँ जो घर पर रहती हैं कोई काम नहीं करतीं।

(ध) महिलाओं के काम पुरुषों के काम की तुलना में कम मूल्यावान समझे जाते हैं।

2. ऐसे विशेष खिलौनों की सूची बनाइए जिनसे लड़के खेलते हैं और .ऐसे विशेष खिलौनों की भी सूची बनाइए जिनसे केवल लड़कियाँ खेलती हैं। यदि दोनों सूचियों में कुछ अन्तर है तो सोचिए और बताइए कि ऐसा क्यों है ?सोचिए कि क्या इसका कुछ संबंध इस बात से है कि आगे चलकर वयस्क के रूप में बच्चों को क्या भूमिका निभानी होगी ?

3. आपके क्षेत्र में रहने वाली किसी महिला से बातचीत कर उनसे यह जानने की कोशिश कीजिए कि उनके घर में और कौन–कौन रहते हैं?वे क्या करते हैं? वे रोज कितने घंटे काम करती हैं और कितना कमा लेती हैं? इन विवरणों के आधार पर एक छोटी सी कहानी लिखिए।

गतिविधि

1.शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से निम्नलिखित क्षेत्रों से संबंधित भारतीय महिलाओं की सूची बनाइए :–

(क)प्रसिद्ध वैज्ञानिक (ख))प्रसिद्ध समाज सेवी (ग) प्रसिद्ध नृत्यांगना

(ध) प्रसिद्ध गायिका (ड) प्रसिद्ध खिलाड़ी

2. भारत में पदस्थापित रहीं निम्नलिखित महिलाओं के नाम शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से लिखिए :–

(क) मुख्यमंत्री (ख)राज्यपाल (ग) प्रधानमंत्री (ध) राष्ट्रपति

(ड) सर्वोच्च न्यायालय की न्यायाधीश (च) लोकसभा अध्यक्ष

3. अपने क्षेत्र में प्रमुख पद पर कार्यरत महिलाओं की सूची बनाइए।

4. सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से एकत्र कीजिए।